The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

48

महाकाव्य परंपरा (रामायण महाभारत) में मानवमूल्य एवं नैतिकता

Dr. Shardadevi R. Rajpoot
Assistant Professor
Shree Swaminarayan Arts College Ahmedabad, Gujarat

सारांश (Abstract):

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है | वह अपने जीवन को विविधताओं से जैसे ज्ञान विज्ञान साहित्य आदि से परिपूर्ण बनता है इन्हीं माध्यम के सहारे जीवन में निरसता, उदासीनता , और अज्ञान पर विजय प्राप्त करता है तथा जीवन को उद्देश्य पूर्ण बनाता है | उद्देश्य के बिना जीवन निरर्थक है | एक दायित्व लेकर मानव अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करता है क्योंकि साहित्य मानवी को मानव बनाता है |

रामायण महाकाव्य में हमें सत्य ज्ञान धर्म नैतिकता संयम पारिवारिक मूल्य दया तब आदि की सीख मिलती है | रामायण त्याग एवं बलिदान की पराकाष्ठा है और आज भी प्रासंगिक महाकाव्य है | महाभारत महाकाव्य विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य कहा जा सकता है | महाभारत ग्रंथ मानव मूल्यों और नैतिकता का संदेश देता है अच्छे बुरे सत्य सत्य ज्ञान ज्ञान जैसे तत्वों पर आधारित यह ग्रंथ है | सत्य एवं असत्य का निर्णय लेना कितना जटिल होता है, तथा पारिवारिक संघर्ष की कथा है गलत जो भी हो बाहरी या परिवार का सदस्य न्याय सभी के लिए एक है| भीष्म की प्रतिज्ञा, पांडवों का मानव धर्म निभाना ऐसे कई उदहारण है | कृष्ण हमें सिखाते हैं कि नैतिकता संदर्भ पर आधारित होती है नैतिकता में व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता, समाज के हित के लिए निर्णय लिया जाता है तथा अधर्मी को उसके कृत्य की सजा मिलनी चाहिए। महाभारत विकास की पराकाष्ठा है | विज्ञान का उदय है |

बीज शब्द :

निरसता, उदासीनता, दायित्व, कर्तव्य क्षमता, भातृ प्रेम, वनागमन, संकटमोचन, नैतिकता, लाक्षागृह, सरशैय्या, विज्ञान

प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है | वह अपने जीवन को विविधताओं से जैसे ज्ञान विज्ञान साहित्य आदि से परिपूर्ण बनता है इन्हीं माध्यम के सहारे जीवन में निरसता, उदासीनता और अज्ञान पर विजय प्राप्त करता है तथा जीवन को उद्देश्य पूर्ण बनाता है | उद्देश्य के बिना जीवन निरर्थक है | एक दायित्व लेकर मानव अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करता है क्योंकि साहित्य मानवी को मानव बनाता है |

भारतीय साहित्य परंपरा समृद्ध रही है | विशेष रूप से हिंदी जगत में महाकाव्य की दीर्घ परंपरा रही है | संस्कृत में रामायण महाभारत जैसे ग्रंथ लिखे गए। रामायण पर आधारित " रघुवंशम" महाकाव्य की रचना देखी जाती है, वैसे ही हिंदी में "रामचरितमानस","प्रिय प्रवास", " साकेत" जैसे महाकाव्य लिखे गए हैं | महाभारत पर आधारित "जयद्रथ वध", " रश्मिरथी", " महाप्रस्थान" खंडकाव्य और "अंधा युग" जैसे गीति नाट्य लिखे गए हैं | इन रचनाओं में मनुष्य को उसके कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होती है।

हमारे जीवन के कुछ मूल्य होते हैं तथा कुछ कर्तव्य होते हैं जिन्हें मनुष्य को निभाना चाहिए| वे मूल्य हैं धर्म, सत्य, कर्तव्य क्षमता, पारिवारिक संबंध | इन्हीं मूल्यों बीच के संघर्षों को " महाभारत "और " रामायण" में प्रस्तुत किया गया है |

"रामायण" महाकाव्य मनुष्य को अपने कर्तव्य जैसे पिता, भाई, पत्नी, माँ, मित्र आदि को कैसे निभाना है उसकी प्रेरणा मिलती है | राम आदर्श एवं मर्यादा पुरुषोत्तम है, उन्होंने हमेशा अपने कर्तव्य को निष्ठा पूर्वक निभाया है | माता कैकेयी द्वारा दिए गए वनवास को उन्होंने धर्म एवं कर्तव्य समझ वनागमन का स्वीकार किया | कौशल्या,सुमीत्रा और माता कैकयी, भरत तथा अयोध्यावासी राम को वापस लेने जाते हैं परन्तु अपने मूल्यों के साथ समझौता नहीं करते वे वापस नहीं जाते हैं | माता कैकेयी के प्रति उनके मन में किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं है| क्षमा उनका सबसे बड़ा गुण है | "साकेत" महाकाव्य में राम कहते हैं :

"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई |
जिस जननी ने है जना भरत- सा भाई |"

नैतिकता का सबसे बड़ा उदाहरण राम का नारी सम्मान है | वानरराज बाली ने अपने अनुज सुग्रीव की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार किया, इसी कारण वश राम ने बाली का वध किया | लक्ष्मण का राम के साथ वन जाना भातृ प्रेम एवं त्याग को रेखांकित करता है | सीता का राम के साथ वनागमन धर्मपत्नी का भाव दिखता है | सीता की अग्नि परीक्षा नई गरिमा एवं पवित्रता का प्रतीक है | हनुमान भक्त हैं, भक्त के रूप में राम के संकटमोचन हैं | स्वामी भक्ति का इससे श्रेष्ठ उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता | मित्र के रूप में सुग्रीव भी अद्भुत है। जब बात रावण की आती है तो रावण ज्ञानी होते हुए भी अज्ञानी एवं क्रूरता पूर्ण व्यवहार करता है और मृत्यु को प्राप्त होता है| रावण की पत्नी मंदोदरी मानवी मूल्यों की परिभाषा और महत्व को समझती है परंतु रावण किसी की कहां सुनने वाला था |

इस प्रकार रामायण महाकाव्य में हमें सत्य ज्ञान धर्म नैतिकता संयम पारिवारिक मूल्य दया तब आदि की सीख मिलती है | रामायण त्याग एवं बलिदान की पराकाष्ठा है और आज भी प्रासंगिक महाकाव्य है | महाभारत महाकाव्य विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य कहा जा सकता है | महाभारत ग्रंथ मानव मूल्यों और नैतिकता का संदेश देता है अच्छे बुरे सत्य सत्य ज्ञान ज्ञान जैसे तत्वों पर आधारित यह ग्रंथ है | सत्य एवं असत्य का निर्णय लेना कितना जटिल होता है, तथा पारिवारिक संघर्ष की कथा है गलत जो भी हो बाहरी या परिवार का सदस्य न्याय सभी के लिए एक है| भीष्म की प्रतिज्ञा, पांडवों का मानव धर्म निभाना ऐसे कई उदहारण है | इसीके साथ जब-जब मानव मूल्य का, नैतिकता का हनन हुआ है तब तब धर्म युद्ध हुआ है | नैतिकता की रक्षा के लिए धर्म युद्ध हुआ है| महाभारत में ऐसे कई प्रसंग आए हैं जैसे बाल भीम को नशीली खीर खिलाकर पानी में डूबना, लाक्षागृह, द्रौपदी चीर हरण, कीचक वध और अभिमन्यु वध आदि |

कृष्ण ने धर्म युद्ध की परिभाषा दी है | अर्जुन को समझाते हैं | यदि यह सभी परिवार के व्यक्ति हैं तो युद्ध के मैदान में क्यों हैं | कृष्ण द्रौपदी की रक्षा करते हैं- यह मानव मूल्य का सबसे बड़ा उदाहरण है| मित्र को मित्रता निभानी चाहिए, सखा के लिए कृष्णा सारथी बनकर अर्जुन के साथ रहते हैं| भीष्म पितामह ने युद्ध मैं नैतिकता पर बल दिया था| युद्ध के बाद एक दूसरे के शिविर में जाकर हाल पूछना, सूर्यास्त के बाद युद्ध नहीं होगा रथी–रथी से युद्ध करेगा | एक व्यक्ति से एक ही युद्ध करेगा निशस्त्र पर वार नहीं होगा | इन नियमों का पालन करना ही नैतिकता थी परंतु भीष्म पितामह के सरशैय्या या के बाद नियमों का पालन नहीं हुआ | नियम दोनों ओर से टूटे पर जिनके साथ कृष्ण है 'वह अधर्म कैसे कर सकता है | कृष्ण ने पांडवों की विजय के लिए पांडवों के द्वारा की हुई अनेक प्रतिज्ञा को याद दिलाते हैं | कृष्ण

हमें सिखाते हैं कि नैतिकता संदर्भ पर आधारित होती है नैतिकता में व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता, समाज के हित के लिए निर्णय लिया जाता है तथा अधर्मी को उसके कृत्य की सजा मिलनी चाहिए। महाभारत विकास की पराकाष्ठा है | विज्ञान का उदय है | जहाँ व्यक्ति स्वार्थी है | विज्ञान मूल्यों को नहीं समझता है | इस प्रकार रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रंथ आज भी प्रासंगिक है | हमें मनुष्य होना सिखाते हैं |

संदर्भ सूची :

1. कविता के पड़ाव, सम्पादक हिंदी अध्ययन समिति, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, जगतभारती प्रकाशन, इलाहबाद, प्रकाशन वर्ष 2016, पृ.40